LANGUAGE DEVELOPMENT

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

AND COLLEGE SHAHPUR PATORY SAMASTIPUR

SUB- DEVELOPMENTAL PSYCHOLOGY
YOUTUBE ON – ANDC LNMU EDUCATION BY DR AMAR SIR

भाषा विकास (Language Development)

भाषा विकास एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति भाषा को सीखने, समझने, और उपयोग करने की क्षमता प्राप्त करता है। यह प्रक्रिया जन्म से लेकर वयस्कता तक चलती रहती है और इसमें व्यक्ति की भाषा की समझ, शब्दावली, व्याकरण, और संचार कौशल का विकास शामिल होता है।

भाषा विकास के चरण

1. पूर्व-भाषा चरण (Pre-Linguistic Stage): यह चरण जन्म से लेकर 12 महीने की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास होता है।

2. भाषा चरण (Linguistic Stage): यह चरण 12 महीने से लेकर 3 वर्ष की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ, शब्दावली, और व्याकरण का विकास होता है।

3. संचार चरण (Communicative Stage): यह चरण 3 वर्ष से लेकर 5 वर्ष की आयु तक चलता है, जिसमें व्यक्ति की संचार कौशल और भाषा का उपयोग करने की क्षमता का विकास होता है।

भाषा विकास के सिद्धांत

1. नैतिकता सिद्धांत (Nativist Theory): यह सिद्धांत कहता है कि भाषा विकास एक नैतिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास होता है।

2. सामाजिक सिद्धांत (Social Theory): यह सिद्धांत कहता है कि भाषा विकास एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है।

3. व्यवहारवादी सिद्धांत (Behaviorist Theory): यह सिद्धांत कहता है कि भाषा विकास एक व्यवहारवादी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास व्यवहार और अनुभव से प्रभावित होता है।

निष्कर्ष

भाषा विकास एक जटिल और बहुस्तरीय प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ, शब्दावली, व्याकरण, और संचार कौशल का विकास शामिल होता है। यह प्रक्रिया जन्म से लेकर वयस्कता तक चलती रहती है और इसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास सामाजिक, सांस्कृतिक, और व्यवहारवादी कारकों से प्रभावित होता है।

चोम्स्की का सिद्धांत (Chomsky's Theory)

नोआम चोम्स्की ने भाषा विकास के लिए एक सिद्धांत प्रस्तुत किया है, जो कहता है कि भाषा विकास एक नैतिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास होता है।

चोम्स्की के सिद्धांत की विशेषताएं

1. नैतिकता: चोम्स्की के अनुसार, भाषा विकास एक नैतिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास होता है।

2. भाषा की संरचना: चोम्स्की के अनुसार, भाषा की संरचना एक जटिल और बहुस्तरीय प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास होता है।

3. व्याकरण: चोम्स्की के अनुसार, व्याकरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है भाषा विकास में, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास होता है।

चोम्स्की के सिद्धांत के चरण

1. भाषा की समझ: चोम्स्की के अनुसार, भाषा विकास का पहला चरण भाषा की समझ है, जिसमें व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास होता है।

2. शब्दावली का विकास: चोम्स्की के अनुसार, भाषा विकास का दूसरा चरण शब्दावली का विकास है, जिसमें व्यक्ति की शब्दावली का विकास होता है।

3. व्याकरण का विकास: चोम्स्की के अनुसार, भाषा विकास का तीसरा चरण व्याकरण का विकास है, जिसमें व्यक्ति की व्याकरण की समझ और शब्दावली का विकास होता है।

चोम्स्की के सिद्धांत की आलोचना

1. नैतिकता की अधिकता: चोम्स्की के सिद्धांत की आलोचना की गई है कि नैतिकता की अधिकता होती है, जो व्यक्ति के भाषा विकास को सीमित कर सकती है।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अनदेखी: चोम्स्की के सिद्धांत की आलोचना की गई है कि सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अनदेखी की गई है, जो व्यक्ति के भाषा विकास को प्रभावित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

चोम्स्की का सिद्धांत भाषा विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। उनके सिद्धांत ने भाषा विकास की नैतिक प्रक्रिया पर जोर दिया है, जो व्यक्ति की भाषा की समझ और शब्दावली का विकास होता है। हालांकि, उनके सिद्धांत की आलोचना भी की गई है कि नैतिकता की अधिकता और सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की अनदेखी की गई है।